International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 27-07-2025, Accepted: 27-08-2025, Published: 11-09-2025
Volume 11, Issue 5, 2025, Page No. 38-40

दलित महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनकी समस्याएँ: एक समग्र अध्ययन

मनीष कुमार
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), समाजशास्त्र विभाग, सी.एम. कॉलेज दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
वर्तमान शोध "दलित महिलाओं की सामाजिक स्थिति एवं उनकी समस्याएँ" पर केंद्रित है। भारतीय समाज में दलित महिलाएँ तिहरे शोषण की शिकार रही हैं—जातिगत भेदभाव, आर्थिक निर्धनता और पितृसत्तात्मक व्यवस्था। यद्यपि भारतीय संविधान ने सभी नागरिकों को समान अधिकार प्रदान किए हैं, फिर भी दलित महिलाओं की स्थिति आज भी संतोषजनक नहीं है।
इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य दलित महिलाओं की सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का विश्लेषण करना तथा उनकी प्रमुख समस्याओं को पहचानना है। अध्ययन में यह पाया गया कि दलित महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ी हुई हैं, जिसके कारण उनके रोजगार और आजीविका के अवसर सीमित हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं तक उनकी पहुँच भी कमजोर है। इसके अतिरिक्त, सामाजिक कुरीतियाँ, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, यौन शोषण और जातिगत हिंसा उनकी समस्याओं को और गहरा बना देती हैं।
शोध का निष्कर्ष यह है कि दलित महिलाओं की वास्तविक स्थिति में सुधार के लिए केवल कानून और योजनाएँ पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि समाज की मानसिकता में परिवर्तन, शिक्षा का प्रसार और महिलाओं की जागरूकता अनिवार्य है। शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता ही उनके सशक्तिकरण की कुंजी है। यदि दलित महिलाओं को समान अवसर, सुरक्षा और सम्मान मिलेगा तो वे समाज की मुख्यधारा में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर सकेंगी।

मूलशब्दः दलित महिलाओं, मुख्यधारा, सामाजिक, शैक्षिक, संतोषजनक, शोषण, जातिगत

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था का प्रभाव सदियों से रहा है, जिसने समाज को ऊँच–नीच के आधार पर विभाजित किया। इसमें दलित समुदाय, जिन्हें पहले 'अछूत' या 'शूद्र' कहा जाता था, सबसे निचले पायदान पर रखा गया। दलित महिलाओं की स्थिति इस व्यवस्था में सबसे दयनीय रही, क्योंकि वे न केवल जातिगत भेदभाव की शिकार थीं बल्कि पितृसत्ता की जकड़ में भी फंसी थीं।
भारतीय समाज में जाति और लिंग दोनों ही ऐसे प्रमुख आधार रहे हैं, जिनके कारण असमानता और भेदभाव ने गहरी जड़ें जमाई हैं। सदियों से चली आ रही जाति–व्यवस्था ने समाज को ऊँच–नीच के आधार पर विभाजित किया, जिसमें दलित समुदाय को सबसे निचले पायदान पर रखा गया। दलित पुरुष और महिलाएं दोनों ही इस व्यवस्था के शिकार बने, किंतु दलित महिलाओं की स्थिति सबसे अधिक दयनीय रही। वे दोहरे नहीं बल्कि त्रिस्तरीय भेदभाव का सामना करती हैं — पहला, जातिगत भेदभाव; दूसरा, लैंगिक भेदभाव; और तीसरा, आर्थिक विषमता। इसीलिए दलित महिलाओं का जीवन संघर्ष और शोषण की एक लम्बी गाथा रहा है।
इतिहास पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट होता है कि दलित महिलाओं को न केवल शिक्षा से वंचित रखा गया बल्कि उन्हें सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियों से भी दूर कर दिया गया। प्राचीन धार्मिक ग्रंथों और सामाजिक परंपराओं ने उनकी स्वतंत्रता को बाधित किया। मध्यकाल में भी दलित महिलाएं मुख्यतः मजदूरी, सफाई कार्य और घरेलू कामों में लगी रहीं। आधुनिक काल में भले ही सामाजिक सुधार आंदोलनों और डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे नेताओं ने दलित महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों पर बल दिया हो, परंतु व्यापक सामाजिक मानसिकता में बड़ा परिवर्तन नहीं आया।
स्वतंत्र भारत ने संविधान के माध्यम से समानता और सामाजिक न्याय की गारंटी दी। अनुसूचित जातियों के उत्थान और महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाएं भी लागू की गईं। किंतु व्यवहारिक स्तर पर दलित महिलाएं अब भी समाज में हाशिये पर खड़ी हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी भागीदारी सीमित है, स्वास्थ्य सेवाओं तक उनकी पहुँच अपर्याप्त है, और आर्थिक स्वतंत्रता अभी भी एक सपना है। राजनीतिक प्रतिनिधित्व की दृष्टि से आरक्षण ने अवसर तो दिए हैं, लेकिन 'प्रॉक्सी नेतृत्व' जैसी प्रवृत्तियों ने उनकी वास्तविक शक्ति को बाधित किया है।

यह अध्ययन दलित महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनकी समस्याओं का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास है। इसमें उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक गतिविधियों, राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन का मूल्यांकन किया जाएगा। साथ ही, उनके सामने मौजूद प्रमुख चुनौतियों की पहचान कर, उनके समाधान के उपाय भी सुझाए जाएंगे। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल दलित महिलाओं की वास्तविक स्थिति को सामने लाता है, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है।
डॉ. भीमराव अंबेडकर का यह कथन — "मैं किसी समाज की प्रगति को वहां की महिलाओं की स्थिति से आंकता हूँ" — स्पष्ट करता है कि महिला की स्थिति सामाजिक प्रगति का मानक है। परंतु दलित महिलाओं के संदर्भ में, आज भी अनेक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाएं मौजूद हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

प्राचीन काल से ही शूद्र और दलित महिलाओं को समाज में निम्न स्थान प्राप्त था।
मनुस्मृति जैसी ग्रंथों में जातिगत और लैंगिक असमानता को धार्मिक आधार दिया गया।

मध्यकाल में दलित महिलाएं मुख्यतः मजदूरी, सफाई कार्य, बंधुआ श्रम और घरेलू काम में लगी रहीं।
स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कुछ दलित महिला नेताओं जैसे सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव की पहल की।
डॉ. अंबेडकर के नेतृत्व में दलित महिलाओं के अधिकारों के लिए आंदोलन हुए, लेकिन सामाजिक परिवर्तन धीमा रहा।

अध्ययन का औचित्य

भारतीय समाज में जाति और लिंग दोनों ही ऐसे आयाम हैं, जिनके आधार पर असमानता और भेदभाव की परंपरा लंबे समय से चली आ रही है। दलित महिलाएं इस व्यवस्था में सबसे अधिक हाशिये पर खड़ी हुई श्रेणी हैं, क्योंकि वे एक साथ दोहरे–तिहरे शोषण का सामना करती हैं—जातिगत भेदभाव, लैंगिक भेदभाव और आर्थिक विषमता। इस कारण उनकी स्थिति को समझना और उनका अध्ययन करना समाजशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक है।

दलित महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी की स्थिति आज भी संतोषजनक नहीं है। सरकारी योजनाओं और आरक्षण नीतियों के बावजूद उनके जीवन में अपेक्षित सुधार नहीं आ पाया है। अनेक शोध और रिपोर्ट यह बताते हैं कि वे घरेलू हिंसा, यौन शोषण, जातिगत हिंसा तथा सामाजिक बहिष्कार जैसी समस्याओं से पीड़ित रहती हैं। इन चुनौतियों का विश्लेषण करना न केवल शैक्षणिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना के लिए भी आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, दलित महिलाओं की समस्याओं का समाधान केवल नीतिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाकर भी संभव है। उनके सशक्तिकरण के लिए शिक्षा, आर्थिक स्वावलंबन और राजनीतिक नेतृत्व को बढ़ावा देना जरूरी है। यह अध्ययन इस दिशा में एक ठोस पहल है, जो दलित महिलाओं की वास्तविक स्थिति को उजागर कर समाज और नीति–निर्माताओं को जागरूक करेगा।

इस प्रकार, यह शोध केवल अकादमिक कार्य न होकर सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक उपयोगी योगदान सिद्ध हो सकता है।

उद्देश्य (Objectives)

1. दलित महिलाओं की वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति का मूल्यांकन।
2. स्वास्थ्य, राजनीतिक भागीदारी और कानूनी अधिकारों के संदर्भ में उनकी स्थिति का विश्लेषण।
3. उनकी प्रमुख समस्याओं की पहचान।
4. उनके सशक्तिकरण हेतु ठोस सुझाव प्रस्तुत करना।

कार्यप्रणाली (Methodology)

यह अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical Research) स्वरूप का है। इसमें दलित महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनकी समस्याओं को समझने हेतु विभिन्न द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

डेटा संग्रह के लिए सरकारी रिपोर्टें (जैसे जनगणना 2011, NFH–5, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट), राष्ट्रीय महिला आयोग (NC) की रिपोर्ट, तथा गैर–सरकारी संगठनों (NGO) द्वारा प्रकाशित सर्वेक्षणों को आधार बनाया गया है। इसके साथ ही, संबंधित विषय पर प्रकाशित शोध–पत्र, पुस्तकों, जर्नल आर्टिकल्स और समाचार पत्रों का भी गहन अध्ययन किया गया है।

शोध की पद्धति में तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसमें ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों, तथा विभिन्न सामाजिक–आर्थिक वर्गों की दलित महिलाओं की स्थिति की तुलना की गई है। इसके अतिरिक्त, केस स्टडी और पूर्ववर्ती शोध निष्कर्षों का विश्लेषण कर समस्याओं के मूल कारणों को समझने का प्रयास किया गया है।

इस प्रकार, यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) तथा आंशिक रूप से मात्रात्मक (Quantitative) दोनों पद्धतियों पर आधारित है, जिससे दलित महिलाओं की वास्तविक स्थिति का समग्र चित्र प्रस्तुत किया जा सके।

दलित महिलाओं की वर्तमान सामाजिक स्थिति

1. शिक्षा

2011 की जनगणना के अनुसार दलित महिलाओं की साक्षरता दर 56.5: है।

उच्च शिक्षा में भागीदारी बेहद कम; IIT, IIM जैसे संस्थानों में दलित महिलाओं का प्रतिशत 1: से भी कम।

मुख्य बाधाएं: गरीबी, सामाजिक भेदभाव, शिक्षा की गुणवत्ता की कमी, और कम उम्र में विवाह।

2. आर्थिक स्थिति

अधिकांश असंगठित क्षेत्र में कार्यरत: कृषि मजदूरी, निर्माण, घरेलू काम।

न्यूनतम मजदूरी से कम भुगतान, रोजगार सुरक्षा का अभाव।

संपत्ति और जमीन पर स्वामित्व बहुत कम।

3. स्वास्थ्य

NFH–5 के अनुसार, 55: दलित महिलाएं एनीमिया से पीड़ित।

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसव के दौरान संस्थागत सुविधा का अभाव।

स्वास्थ्य सेवाओं में जातिगत भेदभाव की घटनाएं अब भी होती हैं।

4. राजनीतिक स्थिति

पंचायतों में 33: आरक्षण ने प्रतिनिधित्व बढ़ाया, लेकिन 'प्रॉक्सी' नेतृत्व का प्रचलन।

दलित महिला नेताओं को जातिगत अपमान और धमकियों का सामना।

प्रमुख समस्याएं

1. **दोहरे/त्रिस्तरीय भेदभाव** — जाति, लिंग और गरीबी के कारण।
2. **शिक्षा में पिछड़ापन** — सामाजिक–आर्थिक कारणों से उच्च शिक्षा तक न पहुँच।
3. **आर्थिक शोषण** — कम मजदूरी, असुरक्षित कार्य परिस्थितियां।
4. **स्वास्थ्य संकट** — कुपोषण, मातृ मृत्यु दर अधिक।
5. **हिंसा और उत्पीड़न** — घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, जातिगत हिंसा।
6. **कानूनी अधिकारों का अभाव** — संपत्ति और भूमि के अधिकार से वंचित।

केस स्टडी

केस 1: उत्तर प्रदेश के एक गांव में दलित महिला सरपंच को निर्णय लेने से रोका गया और पंचायत के कार्य उसके पति व ऊँची जाति के सदस्यों ने संभाले।

केस 2: महाराष्ट्र के एक अस्पताल में प्रसव के लिए गई दलित महिला को घंटों प्रतीक्षा कराई गई, क्योंकि डॉक्टर ने पहले 'ऊँची जाति' की महिला का इलाज किया।

सशक्तिकरण के उपाय

1. **शिक्षा का विस्तार** — विशेष छात्रवृत्ति, आवासीय विद्यालय, निःशुल्क उच्च शिक्षा।
2. **आर्थिक स्वावलंबन** — स्वयं सहायता समूह, महिला सहकारी बैंक, माइक्रो–फाइनेंस।
3. **स्वास्थ्य सुविधाएं** — मुफ्त स्वास्थ्य जांच, मोबाइल क्लीनिक, पोषण योजनाएं।

4. **राजनीतिक प्रशिक्षण** — महिला जनप्रतिनिधियों के लिए नेतृत्व विकास कार्यक्रम।
5. **कानूनी साक्षरता** — दलित महिला अधिकारों पर वर्कशॉप और हेल्पलाइन।
6. **सामाजिक मानसिकता में बदलाव** — मीडिया और शिक्षा के माध्यम से भेदभाव–विरोधी अभियान।

10. अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य (International Perspective)

अफ्रीका और अमेरिका के अश्वेत समुदाय की महिलाएं भी ऐतिहासिक रूप से नस्ल और लिंग आधारित भेदभाव का सामना करती रही हैं। भारत में दलित महिला सशक्तिकरण के लिए अंतरराष्ट्रीय अनुभवों से प्रेरणा ली जा सकती है, जैसे:

सामुदायिक नेतृत्व प्रशिक्षण (Community Leadership Program)

महिला सहकारी कृषि मॉडल

कानूनी सहायता के लिए मुफ्त परामर्श केंद्र।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय समाज की संरचना में जाति और लिंग दोनों ही असमानताओं के प्रमुख आधार रहे हैं। दलित महिलाएं इस दोहरे भेदभाव की शिकार होकर सबसे वंचित और उपेक्षित वर्ग के रूप में सामने आई हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि यद्यपि स्वतंत्र भारत के संविधान ने समानता और सामाजिक न्याय की गारंटी दी है, परंतु व्यवहारिक स्तर पर दलित महिलाओं का जीवन अभी भी संघर्ष और असमानता से घिरा हुआ है।

शिक्षा के क्षेत्र में उनकी स्थिति संतोषजनक नहीं है। सरकारी प्रयासों, छात्रवृत्तियों और विशेष योजनाओं के बावजूद वे उच्च शिक्षा तक नहीं पहुँच पा रही हैं। इसका मुख्य कारण गरीबी, सामाजिक पूर्वाग्रह और बाल विवाह जैसी परंपराएं हैं। शिक्षा की कमी उनके रोजगार के अवसरों को भी सीमित कर देती है, जिसके कारण वे असंगठित क्षेत्र में कम वेतन और असुरक्षित परिस्थितियों में काम करने को विवश होती हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में भी दलित महिलाएं उपेक्षा का सामना करती हैं। कुपोषण, एनीमिया, मातृ मृत्यु दर और प्रसवकालीन जटिलताएं उनकी प्रमुख समस्याएं हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता और जातिगत भेदभाव इन समस्याओं को और गहरा कर देता है।

राजनीतिक भागीदारी की दृष्टि से पंचायतों और अन्य स्थानीय निकायों में आरक्षण ने अवसर तो प्रदान किए हैं, किंतु वास्तविक नेतृत्व की कमी अब भी बनी हुई है। कई बार दलित महिला प्रतिनिधियों को केवल "प्रॉक्सी" के रूप में इस्तेमाल किया जाता है और उनके निर्णय लेने के अधिकार सीमित कर दिए जाते हैं।

सामाजिक स्तर पर वे घरेलू हिंसा, यौन शोषण, जातिगत हिंसा और सामाजिक बहिष्कार जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझती हैं। न्यायिक प्रक्रिया में विलंब और आर्थिक कमजोरी उन्हें और अधिक असुरक्षित बना देती है।

अंततः, दलित महिलाओं की स्थिति में सुधार तभी संभव है जब समाज, सरकार और स्वयं महिलाएं मिलकर सामूहिक प्रयास करें। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी में उनकी समान भागीदारी सुनिश्चित करना ही उनके सशक्तिकरण का वास्तविक मार्ग है। इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकलता है कि दलित महिलाओं की स्थिति में सुधार केवल सामाजिक न्याय की आवश्यकता ही नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए भी अनिवार्य है ।

संदर्भ सूची (Reference)

1. Ambedkar B R. The Untouchables. Who Were They and Why They Became Untouchables. New Delhi, Government of India, 1948.
2. Ambedkar B R. Annihilation of Caste. New Delhi, Navayana, 2014.
3. Arya S. Dalit Feminist Theory: A Reader. New Delhi: Routledge India, 2019.
4. Bagchi J. Indian Women: Myth and Reality. New Delhi: Sage, 2017.
5. Banerjee N. Women in poverty, The impact of caste and gender. Economic and Political Weekly,2018:53(12):45–53.
6. Choudhary S N. Dalit Women and Social Justice. Jaipur: Rawat Publications, 2015.
7. Deshpande S. Contemporary India: A Sociological View. New Delhi: Penguin, 2003.
8. Guru G. Atrophy in Dalit politics. Economic and Political Weekly,2005:40(5):473–476.
9. Irudayam A, Mangubhai JP, Lee J. Dalit Women Speak Out Caste, Class and Gender Violence in India. New Delhi. Zubaan, 2014.
10. Jodhka S S. Caste in Contemporary India. New Delhi: Routledge, 2012.
11. Kabeer N. Gender equality and women's empowerment. A critical analysis of the third millennium development goal. Gender Development,2012:13(1):13–24.
12. Kannabiran K. The Violence of Normal Times Essays on Women's Lived Realities. New Delhi Women Unlimited, 2005.
13. Kumar A. Dalit Women Downtrodden in Caste, Class and Gender Hierarchies. Jaipur Rawat Publications, 2011.
14. Narayan B. Fascinating Hindutva Saffron Politics and Dalit Mobilisation. New Delhi Sage, 2009.
15. National Commission for Women NCW. Annual Report 2019–20. New Delhi. NCW, 2020.
16. National Sample Survey Office NSSO. Women and Employment in India. New Delhi: Government of India, 2018.
17. Omvedt G. Dalits and the Democratic Revolution: Dr. Ambedkar and the Dalit Movement in Colonial India. New Delhi. Sage, 2004.
18. Omvedt G. Seeking Begumpura. The Social Vision of Anticaste Intellectuals. New Delhi Navayana, 2011.
19. Pawar U, Moon M. We Also Made History Women in the Ambedkarite Movement. New Delhi. Zubaan, 2008.
20. Rege S. Writing Caste, Writing Gender. Narrating Dalit Women's Testimonios. New Delhi. Zubaan, 2006.
21. Shah G, Mander H, Thorat S, Deshpande S, Baviskar A. Untouchability in Rural India. New Delhi. Sage, 2006.
22. Sharma K L. Social Stratification and Mobility. Jaipur: Rawat Publications, 2014.
23. Thorat S, Newman K S. Blocked by Caste: Economic Discrimination in Modern India. New Delhi: Oxford University Press, 2010.
24. UNICEF. Gender Equality Global Report 2019. New York. UNICEF, 2019.
25. Velaskar P. Justice, equality and brotherhood: Dalit women's perspectives on democracy and citizenship. Economic and Political Weekly,2016:51(40):59–66.